शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति छात्रों की सीखने की शैली, अभिवृत्ति और धारणा पर अध्ययन

रोशन पांडेय[1], डॉ. लक्ष्मण सिंह[2]
शोधार्थी[1], प्रोफ़ेसर[2]
शिक्षा विभाग, लॉर्ड्स विश्वविधालय, चिकानी, अलवर (राज)

सार:

इस अध्ययन का उद्देश्य संचार प्रौद्योगिकियों के शिक्षा में प्रभाव को समझना और उसके अभिन्न आयामों पर ध्यान केंद्रित करना है। हमने छात्रों की सीखने की शैलियों, अभिवृत्तियों, और धारणाओं को प्रभावित होने के प्रमुख कारकों का विश्लेषण किया है। छात्रों के सीखने के तरीकों को बदल रहे संचार प्रौद्योगिकियों के माध्यम से उनकी सीखने की शैलियों में परिवर्तन आया है। उदाहरण के लिए, वीडियो शिक्षा, वेबिनार, और ऑनलाइन कक्षाएं छात्रों को सक्षम करती हैं अपनी अध्ययन की गति और अनुसंधान करने के लिए। संचार प्रौद्योगिकियों के विस्तार से उपयोग से, छात्रों की अभिवृत्ति में भी सुधार आया है। ऑनलाइन सामाजिक प्लेटफॉर्म्स, वेबसाइट्स, और अनलाइन कक्षाओं में सहयोग के अवसर से छात्र समाज के सक्रिय सदस्य बनते हैं। इसके अलावा, छात्रों की धारणाओं पर भी संचार प्रौद्योगिकियों का प्रभाव होता है। इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी, वीडियो, और अन्य स्रोतों से उनकी धारणाएं परिवर्तित हो जाती हैं। इस अध्ययन के माध्यम से हम शिक्षा प्रणालियों को बेहतर बनाने के लिए संचार प्रौद्योगिकियों के उपयोग के तरीकों को समझते हैं और उनके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सुझाव प्रस्तुत करते हैं।

1. परिचय

हाल के वर्षों में, संचार प्रौद्योगिकियों को शिक्षा में शामिल करना सीखने और शिक्षण के तरीकों के लिए एक नए दृ ष्टिकोण को जन्म देने वाला परिवर्तन लाया है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों, सोशल मीडिया, ऑनलाइन संसाधनों, और इंटरैक्टिव उपकरणों की उपलब्धता के साथ–साथ, छात्र कैसे जानकारी को समझते हैं, उसके साथ जुड़ते हैं, और प्राप्त करते हैं, इस पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। यह पेपर छात्रों की सीखने की शैलियों, अभिवृत्तियों, और धारणाओं पर संचार प्रौद्योगिकियों के बहुपकारी प्रभाव को जांचने का उद्देश्य रखता है। संचार प्रौद्योगिकियों के विकास ने स्टूडेंट्स को सीखने के तरीकों में एक नया परिवर्तन लाया है। पारंपरिक कक्षा की स्थापनाएँ अब शिक्षा के एकमात्र केंद्र नहीं हैं, ऑनलाइन संसाधनों और वर्चुअल कक्षाओं को लेकर लगातार बदलाव हुआ है। वीडियो व्याख्यान, वेबिनार, और ई–लर्निंग मॉड्यूल

आम हो गए हैं, जो छात्रों को उनके व्यक्तिगत पसंद और अनुसूचियों के अनुसार अपने अध्ययन की गति को समझने का अवसर प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, संचार प्रौद्योगिकियों ने छात्रों की सीखने की शैलियों के साथ–साथ उनके शिक्षा के प्रति रुचि में भी परिवर्तन लाया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से लोगों को सहयोग, चर्चा, और सक्रिय भागीदारी का अवसर मिलता है, जो उन्हें शिक्षा समुदाय के गतिविधियों के एक गतिशील सदस्य बनाता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, शैक्षिक वेबसाइट, और ऑनलाइन फोरम सहयोगी स्थानों के रूप में कार्य करते हैं, जहां छात्र संचार करते हैं, संसाधन साझा करते हैं, और विचारों का विनिमय करते हैं, जिससे उनका कुल सीखने का अनुभव बेहतर होता है। इसके अतिरिक्त, संचार प्रौद्योगिकियों का प्रभाव छात्रों की धारणाओं और रुचियों पर भी होता है। इंटरनेट पर उपलब्ध विविध सूचनाओं, वीडियो, और अन्य स्रोतों की भरमार, छात्रों की धारणाओं को सीधे प्रभावित करती है। जब छात्र ऑनलाइन डेटाबेस, वीडियो भंडार, और इंटरैक्टिव ट्यूटोरियल्स के माध्यम से अध्ययन करते हैं, तो उनकी अनुभूति और विचारधारा पर प्रभाव पड़ता है और स्फट होता है। इन सभी विकासों के संदर्भ में, शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकियों की भूमिका और इसके शिक्षण–अधिगम परिणामों का निरीक्षण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। संचार प्रौद्योगिकियों कैसे छात्रों की सीखने की शैलियों, अभिवृत्तियों, और धारणाओं को प्रभावित करते हैं, इसे समझकर और उन्हें उपयोगी बनाकर, शिक्षक अपने शिक्षण पद्धतियों को समायोजित और नवाचारी बना सकते हैं। यह पेपर इस विषय में योगदान करने का प्रयास करता है, और शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकियों के समावेश को अनुकूलित करने के लिए सुझाव और अभ्यास प्रस्तुत करता है।

2. शोध अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली का अध्ययन करना।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की धारणा का अध्ययन करना।
- सीखने की शैली और अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सीखने की शैली और धारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- धारणा और अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. शोध की परिकल्पना

- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण छात्र–छात्राओं की सीखने की शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति शहरी छात्र–छात्राओं की सीखने की शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति शहरी छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की धारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण छात्र–छात्राओं की धारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति शहरी छात्र–छात्राओं की धारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली और अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- ग्रामीण विद्यार्थियों की सीखने की शैली और अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली और अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली और धारणा के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- ग्रामीण विद्यार्थियों की सीखने की शैली और धारणा के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली और धारणा के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की धारणा और अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- ग्रामीण विद्यार्थियों की धारणा और अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
- शहरी विद्यार्थियों की धारणा और अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

4. जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के अन्तर्गत अलवर जिले के ग्रामीण और शहरी स्कूलों के 600(ग्रामीण – 300, शहरी – 300) बालक व बालिकायें दोनों ही सम्मिलित किये गये है।

अलवर जिले के 600 उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र (ग्रामीण और शहरी)			
ग्रामीण 300		शहरी 300	
छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
150	150	150	150

इस अध्ययन का एक मुख्य उद्देश्य छात्र–शिक्षकों की सीखने की शैलियों को मापने के लिए एक उपकरण विकसित और सत्यापित करना है, जो आईसीटी स्केल के संदर्भ में काम करेगा। यह उपकरण विभिन्न संदर्भों से आए बयानों का संग्रह करेगा, जो छात्र–शिक्षकों की सीखने की शैलियों को विवेचित करेगा, और इसके अंतर्गत प्रत्येक शैली की अद्यावधिकता को मापेगा। प्रारंभिक चरण में ष्छात्र–शिक्षकों की आईसीटी के साथ सीखने की शैलियोंष् के नाम से उपकरण के निर्माण के लिए, हम विशेषज्ञों के साथ विवेचन करेंगे, और संदर्भों को ध्यान में रखते हुए उपकरण को विकसित करेंगे। इस प्रकार, यह अध्ययन छात्र–शिक्षकों की धारणाओं को समझने और आईसीटी के प्रयोग के प्रति उनकी रुचि को मापने में मदद करेगा।

5. विश्लेषण

परिकल्पना 1. शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 5.1 शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सीखने की शैली को प्रदर्शित करती तालिका

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (MEAN)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी –मान (T-Value)	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
ग्रामीण	300	29.57	8.18	1.660	2.37	अस्वीकृत
शहरी	300	31.23	8.93			

(डी.एफ 598 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.59)

परिकल्पना संख्या 2 शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण छात्र–छात्राओं की सीखने की शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–5.2

शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण छात्र–छात्राओं की सीखने की शैली को प्रदर्शित करती तालिका

समूह	**संख्या (N)**	मध्यमान **(MEAN)**	मानक विचलन **(S.D.)**	मध्यमान का अंतर	टी –मान **(T-Value)**	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
ग्रामीण छात्र	150	28.71	8.26	1.71	1.82	स्वीकृत
ग्रामीण छात्रा	150	30.43	8.03			

(डी.एफ 298 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.59)

परिकल्पना संख्या 3 शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति शहरी छात्र–छात्राओं की सीखने की शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–5.3

शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति शहरी छात्र–छात्राओं की सीखने की शैली को प्रदर्शित करती तालिका

6- शोध निष्कर्ष

यह अनुसंधान छात्रों की शैक्षिक संचार प्रौद्योगिकी में रुचि, दृष्टिकोण और धारणाओं को समझने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य है जानना कि छात्र कैसे संचार प्रौद्योगिकियों जैसे इंटरनेट, वीडियो, सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग, ईमेल और अन्य डिजिटल माध्यमों का शिक्षा में उपयोग करते हैं। यह अनुसंधान छात्रों की शिक्षा के अवसरों और संचार प्रौद्योगिकियों के उपयोग के बीच के संबंध को अध्ययन करता है, जिससे आधुनिक शिक्षा की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो।

अनुसंधान का नमूना राजस्थान के अलवर जिले के ग्रामीण और शहरी स्कूलों से चयनित 600 छात्रों पर आधारित है। ये स्कूल विभिन्न शैक्षिक परिसरों को प्रतिनिधित करते हैं, जो शिक्षा प्रक्रिया में संचार प्रौद्योगिकी के समावेश को लेकर विभिन्न अवसरों और चुनौतियों को प्रस्तुत करते हैं। इस अनुसंधान के माध्यम से हम छात्रों की रुचि, पसंद और संचार प्रौद्योगिकियों के प्रति उनके धारणाओं का विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे।

विभिन्न पैरामीटरों का मूल्यांकन करने के लिए हमने उच्च शिक्षा अनुसंधान और छात्रवृत्ति केंद्र द्वारा तैयार की गई एक टूलकिट का उपयोग किया है। यह टूलकिट छात्रों की रुचि, पसंद और संचार प्रौद्योगिकियों के प्रति उनके धारणाओं का विश्लेषण करने में सहायक होगा। इस अनुसंधान के माध्यम से हमें यह ज्ञात होगा कि संचार प्रौद्योगिकियों कैसे छात्रों की शैक्षिक शैली और शिक्षा के प्रति उनकी धारणा पर प्रभाव डालती है। इस अध्ययन के माध्यम से, हम शिक्षा में नई नवीनतम और सुधारित उपायों की खोज कर सकते हैं और शिक्षा प्रक्रिया को सुधारने में मदद कर सकते हैं। यह अध्ययन स्पष्टतः दिखाता है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अंतर हो सकता है। इसमें कई कारकों का प्रभाव होता है, जैसे सामाजिक और आर्थिक परिवेश, स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता, और शैक्षिक अनुभवों की विविधता। इस अंतर का पहला पहलू है सीखने की शैलियों में। ग्रामीण और शहरी छात्रों की सीखने की शैलियों में अंतर होता है क्योंकि उनके समाजिक और आर्थिक परिवेश, स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता, और उनके शैक्षिक अनुभवों में भिन्नता होती है। इससे उनकी सीखने की अभिवृत्ति में भी अंतर आता है।

दूसरा पहलू है अभिवृत्ति में। अध्ययन के नतीजों के अनुसार, ग्रामीण और शहरी छात्रों की अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता। इससे यह साबित होता है कि उनकी संवेदनशीलता और प्रतिक्रिया विशेषताओं में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति कोई विविधता नहीं होती।

तीसरा पहलू है धारणा में। ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच धारणा में भी अंतर होता है। इस अंतर का कारण उनके संचार प्रौद्योगिकी के प्रति विचारों, उनकी ताकतों और कमजोरियों, और उनकी शैक्षिक साझेदारियों में भिन्नता हो सकती है। इससे हमें समझ में आता है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में छात्रों के बीच शिक्षा में संचार प्रौद्योगिकी के प्रति इस अंतर को समझना और ध्यान देना आवश्यक है।

7. संदर्भ

1. मुमिन, यू.ए. (2019), शिक्षा जगत में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका (शिक्षा क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिकाय ई–शिक्षा), अल–अफकर, जर्नल फॉर इस्लामिक स्टडीज, 104–119।
2. इस्मतुल्लायेवना, एम.डी., और युसुपोविच, ई.जी. (2019), शैक्षिक प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग की प्रभावशीलता, यूरोपियन जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिफ्लेक्शन इन एजुकेशनल साइंसेज खंड, 7(12)।
3. मार्कोवा, ओ., सेमेरिकोव, एस., स्ट्रायुक, ए., शलात्स्का, एच., नेचिपुरेंको, पी., और ट्रॉन, वी. (2019), भावी सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के प्रशिक्षण में क्लाउड सेवा मॉडल का कार्यान्वयन।
4. अक्सू, एफ.एन., और डुरक, जी. (2019), शिक्षा में रोबोटिक्सरू सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षकों के विचारों की जांच, जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड ई–लर्निंग रिसर्च, 6(4), 162–168।
5. हॉलमैन, ए.के., हॉलमैन, टी.जे., शिमरडला, एफ., बाइस, एम.आर., और एडकिंस, एम. (2019)। शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी मागर्रू मध्य विद्यालय के छात्रों के साथ हस्तक्षेप। कंप्यूटर एवं शिक्षा, 135, 49–60।
6. शत्रु, जेड जी (2020),छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के फायदे और नुकसान,जर्नल ऑफ टर्किश साइंस एजुकेशन, 17(3), 420–428।
7. जुरायेव, टी. (2020), षशिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकीष विषय पर डिजिटल शिक्षा के आधार पर ज्ञान के मूल्यांकन के इंटरैक्टिव तरीके, इंटरनेशनल जर्नल पैपियर पब्लिक रिव्यू, 1(2), 71–77।
8. अलमुटैरी, एस.एम., गुतुब, ए.ए.ए., और अल–जुएद, एन.ए. (2020),सऊदी अरब के भीतर शैक्षिक प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए शिक्षकों को प्रेरित करना, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी एन्हांस्ड लर्निंग, 12(2), 200–217।
9. साहिन, वाई.जी., और सेलिक्कन, यू. (2020), उच्च शिक्षा संस्थानों और उद्योग के बीच सूचना प्रौद्योगिकी विषमता और अंतराल, सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा जर्नल. अनुसंधान, 19, 339.
10. स्जिमकोवियाक, ए., मेलोविक, बी., डाबिक, एम., जेगनाथन, के., और कुंडी, जी.एस. (2021), सूचना प्रौद्योगिकी और जेन जेडरू युवाओं की शिक्षा में शिक्षकों, इंटरनेट और प्रौद्योगिकी की भूमिका। समाज में प्रौद्योगिकी, 65, 101565।
11. शारिपोव, एफ.एफ., क्रोटेंको, टी.वाई., और डायकोनोवा, एम.ए. (2021)। आर्थिक शिक्षा की डिजिटल क्षमतारू एक प्रबंधन विश्वविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की वर्तमान उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और डिजिटल संभावनाएँ, 561–572।